मुक्ति का मार्ग प्रसस्त करती है गीता

भारत में बहुत धर्म शास्त्र है परन्तु सबसे महत्वपूर्ण और सर्वमान्य है, सर्व शास्त्र शिरोमणि 'श्रीमदभगवद गीता'। यह स्वयं सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा के मार्गदर्शन का संक्षिप्त संकलन है। यह सकमेव धर्म-ग्रन्थ है जिमसें 'भगवानुवाच' इस शब्द का उल्लेख है। सर्व आत्माओं को पतित से पावन बनाने वाला, दु:खहर्त्ता-सुखकर्त्ता, परमपिता, परम शिक्षक एवं परम सदगुरू निराकार परमात्मा ने 'धर्म ग्लानि' के समय परमधाम से इस साकार सृष्टि में अवतरित होकर सृष्टि का पुन:उद्धार किया था। जिसकी यादगार 'श्रीमदभगवद' गीता के रूप में आज भी मौजूद है। गीता के वास्तविक अध्ययन और कर्मणा में लाने से ही मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति मिल सकती है।

गीता के भगवान के बारे में अनेक मत

गीता के भगवान एवं आदि वक्ता के बारे में विद्वानों में अनेक मत है। जैसे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन लिखते हैं कि-'हमें गीता के मूल लेखक का नाम मालूम नहीं है। भारत के प्रारम्भिक साहित्य के लेखकों के नाम अज्ञात है'। स्वामी विवेकानन्द भी कहते हैं कि - कृष्ण के व्यक्तित्व के बारें में शंकाएं हैं। इसलिए निश्चित रूप से यह निष्कर्ष निकल सकता है कि महाभारत-युद्ध में किसी दिव्य विभूति का आगमन हुआ हो और उसने तत्कालीन समाज को दिव्य गीता ज्ञान देकर ही मुझे प्रतीत हुआ यह कोई की हो। इसी प्रकार महात्मा गांधी कहते हैं -'गीता के प्रथम दर्शन से ही मुझे प्रतीत हुआ कि यह कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है इसमें भौतिक युद्ध को निमित्त बनाकर मनुष्य के ह्दय में निरन्तर होने वाले द्वन्द्व युद्ध का ही वर्णन है। भगवान के बारे में विद्वानों में मत-मतान्तर है। इसलिए ही आदि शंकराचार्य 'अद्वैतवाद', यमुनाचार्य का 'विशिष्ट अद्वैतावाद', माधवाचार्य का 'द्वैतावाद', केशव कश्मीरी जी का 'द्वैताद्वैव वाद' वल्लभाचार्य का 'शुद्धाद्वैतवाद' आदि-आदि प्रख्यात है। वादे-वादे जायते तत्व बोध: इस उक्ति के अनुसार गीता के भगवान को तथा उसमें विश्व कल्याण के लिए दिये हुए श्रीमत एवं सहज राजयोग को हम भूल गये हैं।

आज हमारे देह के धर्म अनेक होते हुए भी हम भाईचारे का नारा लगाते है। जरूर हम सभी एक ही परमपिता की संतान है। गीता सारे विश्व के लिए ज्ञान माता है तो जरूर गीता ज्ञान

दाता ज्ञान सागर पतित पावन, परमशिक्षक एवं सदगुरु ही विश्व के परमपिता होंगे। वह कौन है, उसका नाम-रूप क्या है, उसका निवास कहाँ है? वह इस सृष्टि रंगमंच पर कब अवतरित होते हैं? वह कौन सा कर्त्तव्य करते हैं? उनका हम देहधारी आत्माओं से क्या सम्बन्ध है? उनसे हमें क्या-क्या प्राप्ति होती है? आदि प्रश्नों का समाधान होने पर तथा स्वानुभव होने पर ही हम गीता के भगवान को-वह जो है जैसा है वैसे ही यथार्थ पहचान सकेंगे और तभी मुक्ति तथा जीवनमुक्ति के तरफ अग्रसर हो सकेंगे।

भगवान स्वयं का परिचय स्वयं ही देते हैं

गीता के भगवान आदेश देते हैं कि - हे अर्जुन, मामेकम शरणम् व्रज। मेरी एक की शरण मे आ जाआ। तै तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। परन्तु जब तक हमें भगवान के सत्य स्वरूप का ज्ञान नहीं है तब तक हम उनकी शरण कैसे ले सकते हैं? इसलिए अर्जुन ने पूछा कि हे भगवान आप अपने स्वरूप से मुझे अवगत किजिए तभी मैं आपाक निरन्तर चिन्तन और ध्यान कर सकूंगा। और स्वयं भगवान द्वारा परिचय मिलने पर अर्जुन ने फिर सवाल पूछते हुए कहा कि अब मेरे सभी संशय दूर गये हैं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com